इन मृदु दारोगाओं का नाम सुनते ही गीली हो जाती थी अपराधियों की चड्ढी

Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 23 May 2017 09:11

: कुख्यात अपराधी राजू भटनागर को इलाहाबाद में घेरने वाले आरपी सिंह अब प्रकाश सिंह के शिष्यत्व में : बीएन सिंह की शोहरत आलमबाग से लेकर जौनपुर, काशी तक दमकती थी : बब्बन सिंह और राजाराम पाल किसी बब्बर शेर से कम नहीं थे : लौर तो अपने बाल खुद ही काटते थे : लखनऊ के दारोगा - चार :

कुमार सौवीर

डिप्टी एसपी आरपी सिंह

लखनऊ : विष्णु मिश्र जैसे लोगों की बात छोड़ दीजिए। पुलिस की नौकरी में यह नराधम माने जाते हैं। ठीक उसी तरह, जैसे तिन-टंगा त्रिपाठी, विनय वर्मा, ओपी पांडे, अतुल सक्सेना और राकेश शंकर वगैरह बेगैरत लोग। इन लोगों ने तो वाकई पुलिस विभाग की नाक ही काट डाली थी। सच कहें तो यह लोग पुलिस के रक्षक नहीं, बल्कि हत्यारे, लुटेरे ही हैं। पैसा के लिए कुछ भी करने के लिए जो ताकत, रणनीति और साहस का प्रदर्शन जितना यह लोग कर सकते हैं, वह बेमिसाल है। बालू से तेल निकालने तो कोई इनसे देखे।

लेकिन जिन लोगों के नाम से पुलिस महकमा चमकता-दमकता है, उन दारोगाओं का नाम आज भी लोगों के जेहन में बरबस ध्रुव-नक्षत्र की तरह गूंजता है। इन लोगों ने ही लखनऊ के बाशिंदों को एक नया सुकून भरा माहौल दिया है। जिसमें अपराध कम से कम, और सुरक्षा अधिकतम रही है।

तो पहले नाम सुन लीजिए रामप्रताप सिंह का, जिसको आमतौर पर लोग आरपी सिंह कहते थे। हजरतगंज कोतवाली पर उस शख्स का गजब कब्जा था। करीब छह फीट ऊंचाई। लाजवाब कद-काठी, जनता के साथ बात करते वक्त जुबान पर मिश्री, अपराधियों के साथ बात-बात पर गाली। हरदोई के सीओ सिटी से रिटायर हुए आरपी सिंह।

राकेश शंकर

जिनकी उम्र 45 के आसपास हो चुकी है, उन्हें पता होगा कि राजू भटनागर नामक एक दुर्दांत हत्यारे का नाम तीन दशक पहले किसी दहशत का पर्याय हुआ करता था। तब के एसपी एसएन सिंह वगैरह के साथ मिल कर आरपी सिंह ने राजू को इलाहाबाद के एक गैरेज में घेरा, और वहीं उसकी अन्त्येष्टि कर डाली। डिप्टी एसपी के पद से रिटायर होकर आरपी सिंह आजकल प्रदेश के पूर्व डीजीपी पद्मश्री प्रकाश सिंह के साथ हैं।

1 / 3

Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 23 May 2017 09:11

बी□न सिंह□ आलमबाग कोतवाली से यह शख्□स राजधानी में चमका□ राजधानी में होनी वाली आपराधिक हरकतों पर गहरी निगहबानी के लि□ तक के पुलिस मुखियाओं की खास पसंद हुआ करते थे बी□न सिंह□ अपराधियों की रग-रग और उनके चरित्र को खूब पहचानने वाले बी□न सिंह ने अपनी सारी जानकारियों को और भी पैना किया, और फिर उसे केवल पुलिस महकमे को समृद्ध करते रहे□ हालांकि बाद में उसके बाद यही शख्□स बनारस, जौनपुर, सोनभद्र, मिर्जापुर तक घूमता रहा, और टोपी-क्रेसी को सबसे ज्□यादा मजबूत किया□ खास बात तो यह कि बी□न सिंह का नाम कभी भी किसी फर्जी □नकाउंटर में नहीं आया□ बी□न सिंह बेलौस, बेदाग और कुशल प्रशासक रहे हैं□

बब्□बन सिंह ने आलमबाग, कृष्□णानगर और चौक समेत कई कोतवालियों में प्रभार सम्□भाला□ और हर जगह अपने नाम का डंका बजाया□ इतना ही नहीं, बब्□बन सिंह की पोस्टिंग भले ही कहीं रही हो, किसी भी संवेदनशील हादसे पर बब्□बन की मौजूदगी अनिवार्य समझी-मानी जाती थी□ अपराध और अपराधी ही नहीं, बल्कि अपराध की प्रत्□येक प्रवृत्ति-क्रियाविधि को बारीकी से समझने वाले बब्□बन सिंह, बी□न सिंह और आरपी सिंह का काम अचूक हुआ करता था□

□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□:-

[□□□□□ □□□□□□□](#)

यही बात राजाराम पाल की थी□ बेशुमार मेहनत करते थे राजाराम□ सुबह से लेकर शाम तक मुखबिरों से सूचना□ं इकट्ठा करने के बाद राजाराम की दिनचर्या रात 11 बजे से तड़के-भोर तक अपराधियों की तलाशी और छापामारी में बीतती थी□ हां, मुखबिरों को अपनी जेब से पैसा देने में राजाराम को कोई भी गुरेज नहीं थी, और उनकी जेब तक यह रकम उनकी अवैध कमाई से आती थी□ कुल ऊपरी कमाई का 90 फीसदी पैसा अपने और अफसरों की सेवा में, और बाकी 10 फीसदी मुखबिरों के जीवन-निर्वाह भत्□ता के तौर पर खर्च होता था□

ओपी पांडेय, एएसपी

लेकिन अचानक अक्षयवर मल्□ल नामक □क नेता को लेकर राजाराम की ठन गयी□ मल्□ल का नाम मुलायम सिंह यादव के करीबियों में शामिल था□ □क बार प्रदर्शन हुआ, तो उसमें मल्□ल की मौत हो गयी□ तब उसके साथी रविदास मेहरोत्रा ने मल्□ल की मौत का ठीकरा राजाराम पर फोड़ दिया□ राजाराम को उस वक्□त कैंसर था, इसलि□ वह काफी चिड़चिढ़ा और मुंहफट-बदतमीज भी हो चुका था□ □क दिन यूं ही बातचीत में राजाराम पाल ने अपने दिल की बात जाहिर कर दी□ सच भी यही था कि मल्□ल की मौत की कारण दीगर वजहों से हुई थी, राजाराम उसका कारण नहीं था□ मुझे लगा कि उसकी पीड़ा भी □क खबर है□ मैंने पर खबर लिखी□ तब मैं दैनिक जागरण के लखनऊ संस्□करण में वरिष्□ठ संवाददाता हुआ करता था□

लेकिन मेरे इस प्रयास पर रविदास मेहरोत्रा ने मेरे खिलाफ मोर्चा खोल दिया□ मेरे खिलाफ जागरण के दफ्तर में जमकर प्रदर्शन हुआ□ रविदास के

Written by कुमार सौवीर
Tuesday, 23 May 2017 09:11

नेतृत्□व में□ जागरण के कई लोग भी मुझसे खासे खार खाये बैठे रहते थे□ सब ने मलि कर सम्□पादक वनिोद शुक्□ला के कान भरे□ इसी बीच तीन दनि हो गये, मैंने कसिी से भी अपना स्□पष्□टीकरण नहीं दयिा□ नतीजा, लोग मुझसे खफा होने लगे□ बात जागरण के दफ्तर से नकिल कर बाहर नकिलने लगी□ अचानक आरपी सहि जैसे कई वरषि्□ठ दारोगा-कोतवाल और बड़े दारोगा यानी दो आईपी□स मेरे पक्ष में मेरे सम्□पादक के पास पहुंचे और मल्□ल की मौत की असलयित जाहरि कर दी□ वनिोद शुक्□ला को बताया गया कि सच यही है कि मल्□ल की मौत में राजाराम पाल के चलते नहीं हुई, और दूसरी बात यह कि कुमार सौवीर ने जो कुछ भी लखिा है, वह शब्□दश: सच है□

बात खत्□म हो गयी□ उसी दनि शाम को वनिोद शुक्□ला मुझे लेकर □मबी क्□लब ले गये और जमकर दारू पलिायी□ हां, हां, कबाब और मुर्गा भी खलिाया□ **(□□□□□:)**

□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□इस बारे में **www.meribitiya.com** से इस ब□ दारोगा यानी आईपी□स अफसर राकेश शंकर से बातचीत की□ जरा सुनयि कि क्□या-क्□या धमकी नहीं दे रहे हैं राकेश शंकर□

इतना ही नहीं, जब राकेश शंकर को अहसास हो गया कि मामला अब तक पहुंच गया है, तो आखरि में कसि तरह वनिीत भाव में गड़िगड़िाने लगे ब□ दारोगा राकेश शंकर□ इस बातचीत को सुनने के लए□ नमि्□न लकि पर क्लकि कीजएि:- देख लो न, कि कैसे अंधेरगर्दी मचा रखा है ब□ दारोगा राकेश शंकर ने

राकेश शंकर की करतूत पर सबसे पहले प्रकाशति हुई खबर को पढ़ने के लए□ कृपया नमि्□न लकि पर क्लकि कीजएि गा:- इस बड़े दारोगा की गुण्□डागर्दी तो देखयि□ जीना हराम कर रखा है इन अनाथ बच्चयिों का

(अब www.meribitiya.com की हर खबर को फौरन हासिल कीजिए अपनी फेसबुक पर। मेरी बिटिया डॉट कॉम के फेसबुक पेज पर पधारिये और LIKE पर क्लिक कीजिए)

(अपने आसपास पसरी-परासती दलाली, अराजकता, लूट, भ्रष्टाचार, टांग-खिंचाई और किसी प्रतिभा की हत्या की साजिशें किसी भी शख्स के हृदय-मन-मस्तिष्क को विचलित कर सकती हैं। समाज में आपके आसपास होने वाली कोई भी सुखद या घटना भी मेरी बिटिया डॉट कॉम की सुर्खिया बन सकती है। चाहे वह स्त्री सशक्तीकरण से जुड़ी हो, या फिर बच्चों अथवा वृद्धों से केंद्रित हो। हर शख्स बोलना चाहता है। लेकिन अधिकांश लोगों को पता तक नहीं होता है कि उसे अपनी प्रतिक्रिया कैसी, कहां और कितनी करनी चाहिए।अब आप निःश्चिंत हो जाइये। अब आपके पास है एक बेफिक्र रास्ता, नाम है प्रमुख न्यूज पोर्टल www.meribitiya.com। आइंदा आप अपनी सारी बातें हम www.meribitiya.com के साथ शेयर कीजिए न। ऐसी कोई घटना, हादसा, साजिश की भनक मिले, तो आप सीधे हमसे सम्पर्क कीजिए। आप नहीं चाहेंगे, तो हम आपकी पहचान छिपा लेंगे, आपका नाम-पता गुप्त रखेंगे। आप अपनी सारी बातें हमारे ईमेल kumarsauvir@gmail.com पर विस्तार से भेज दें। आप चाहें तो हमारे मोबाइल 9415302520 पर भी हमें कभी भी बेहिचक फोन कर सकते हैं।)